



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 292]
No. 292]

नई दिल्ली, मंगलवार, मई 27, 2008/ज्येष्ठ 6, 1930
NEW DELHI, TUESDAY, MAY 27, 2008/JYASTHA 6, 1930

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 मई, 2008

सं. 27/2008-सेवा-कर

सा.का.नि. 405(अ).—वित्त अधिनियम, 1994 (1994 का 32) की धारा 93 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार के इस बात से संतुष्ट हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना आवश्यक है, एतद्वारा भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 1/2006-सेवा-कर, दिनांक 1 मार्च, 2006, सा.का.नि. 115 (अ), दिनांक 1 मार्च, 2006 के तहत, में आगे और निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :-

उक्त अधिसूचना में, सारणी में, क्रम सं. 4 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के पश्चात् निम्नलिखित क्रम सं. और प्रविष्टियाँ अंतःस्थापित की जायेंगी, अर्थात् :-

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
-----	-----	-----	-----	-----

“4क. (यह) चिट के संबंध में प्रदान सेवा। — 70”।

स्पष्टीकरण.—“चिट” का अर्थ

है ऐसा कारोबार चाहे इसे चिट,

चिटफंड, चिट्टी, कुरी अथवा कोई

और नाम दिया जाए, जिसके द्वारा

अथवा जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति

विनिर्दिष्ट संख्या में व्यक्तियों के

साथ यह करार करता है कि उनमें

से प्रत्येक व्यक्ति कतिपय राशि

(अथवा इसके एवज में कतिपय

मात्रा में अनाज) का एक निश्चित

अवधि के दौरान आवधिक किश्तों

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
-----	-----	-----	-----	-----

के जरिए योगदान करेगा और योग-
दान करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपनी
बारी आने पर चिट करार में यथा
विनिर्दिष्ट भाग्य द्वारा अथवा बोली
द्वारा अथवा निविदा द्वारा अथवा ऐसे
किसी अन्य प्रकार से यथा निर्धारित
पुरस्कार राशि का पात्र होगा।

[फा. सं. 332/3/2008-टीआरयू]

जी. जी. पई, अवर सचिव

टिप्पण : मूल नियम अधिसूचना सं. 1/2006-सेवा कर, तारीख 1 मार्च, 2006 द्वारा अधिसूचित किए गए थे और भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग II, खंड 3, उप-खंड (i) में से सा. का. नि. 115 (अ), तारीख 1 मार्च, 2006 द्वारा प्रकाशित किए गए थे और उनमें अंतिम संशोधन अधिसूचना सं. 38/2007-सेवा-कर, तारीख 23 अगस्त, 2007 द्वारा किया गया था जो सं. सा.का.नि. 565 (अ), तारीख 23 अगस्त, 2007 द्वारा प्रकाशित की गई थी।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 27th May, 2008

No. 27/2008-Service Tax

G.S.R. 405(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 93 of the Finance Act, 1994 (32 of 1994), the Central Government, on being satisfied that it is necessary in the public interest so to do, hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue), No. 1/2006-Service Tax, dated the 1st March, 2006, vide number G.S.R. 115(E), dated the

1st March, 2006, namely :—

In the said Notification, in the Table, after Sl. No. 4, and the entries relating thereto, the following serial number and entries shall be inserted, namely : —

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
4A.	(zm)	Services provided in relation to chit.	-	70".

Explanation:— "Chit" means a transaction whether called chit, chit fund, chitty, kuri, or by any other name by or under which a person enters into an agreement with a specified number of persons that every one of them shall subscribe a certain sum of money (or a certain quantity of grain instead) by way of periodical installments over a definite period and that

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
				each subscriber shall, in his turn, as determined by lot or by auction or by tender or in such other manner as may be specified in the chit agreement, be entitled to the prize amount.

[F. No. 332/3/2008-TRU]

G. G. PAI, Under Secy.

Note :—The principal notification No. 1/2006-Service Tax, dated the 1st March, 2006, was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) *vide* number G.S.R. 115(E), dated the 1st March, 2006 and was last amended by notification No. 38/2007-Service Tax, dated the 23rd August, 2007, No. G.S.R. 565(E), dated the 23rd August, 2007.